वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 25	Year 3	Volume 1	October 2014 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 2

विचार

Mahatma's talisman

Mahatma Gandhi is revered and called Father of the Nation, not because, he, by using his principles of non-violence (Ahimsa), made the British quit India and earned freedom for the country, but because his life epitomizes what is the ultimate when it comes to human values.

Here I'm referring to one particular incident of his life. - Mahatma would always move in third class while traveling by train simply because he believed that he had no right to avail higher class when majority population of his country could afford only third class. He 'd defend his decision by giving another forceful argument that traveling in lowest class also gave him the opportunity to know about the poorest of the poor of his country.

This was not all, he would decline offer of security by saying that to him security of his people was more important than his own security.

During one such travels when he was standing near the door of a speeding train, immersed in thoughts, one of his slippers slipped from his foot and fell on the receding ground below. The moment he realized that he has lost one of his sleepers, he dropped the other one also. When a co-passenger asked him the reason for his intriguing action of throwing the second sleeper as well, he replied, “One slipper is of no use to me and it would be of no use to the one would have got the first one which fell accidentally. So I dropped the second one so that at least he would have a full pair.”

A man who was fighting with the world's mightiest empire and had entire nation looking to him for direction and guidance would not forget to do small-small things or would not leave these to others.

He would make time to meet the unshod man. He would take leave from deliberations of national importance to feed and

जब भी आप अपने आप को दुविधा में पाते हैं तो आंखें बन्द करके समाज के छोटे से छोटे और गरीब से गरीब व्यक्ति के बारे में सोंचे कि आप के निर्णय का उन पर क्या असर पड़ेगा। आप बहुत से गलत निर्णय लेने से बच जायेंगे।

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

bath the goat he had reared. He has left a billion dollar advice for the rulers of the states and countries-"I give you a talisman, when in doubt, shut your eyes and think how poorest of poor will be affected by your decision and action" I am confident, most of the problems afflicting the developed as well as developing countries would be over if they follow Mahatma Gandhi but pity is that in his own country, it is reduced to garlanding him on his birthday.

अच्छी बातें भी हो रही हैं

गुजरात के भारतीय जनता पार्टी के सदस्य श्री विथल राडाडीया और उनकी पत्नि चेतना ने एक साहसिक कदम उठा कर समाज के सामने एक अच्छा उदाहरण रखा। श्री विथल राडाडीया का बेटा कलपेश पिछले साल दिल का दोरा पड़ने के कारण स्वर्ग सिधार गया और अपने पीछे 24 वर्षिय पत्नि मनीशाा, एक बेटा और यक छोटी बेटी छोड़ गया था। श्री विथल राडाडीया और उनकी पत्नि ने बहुत साहसिक कदम उठाते हुये अपनी बहु मनिशा की श्शादी कलपेश के ही एक दोस्त हार्डिक से पिछले सप्ताह कर दी। यही नही श्री विथल राडाडीया ने 100 करोड़ की जायदाद मनीशा को कन्यादान में दी। समाज में अच्छे लोगों की भी कमी नही।यहां यह बता देना आवश्यक है कि

अग्रेंज शासको ने विधवा विवाह को लेकर बहुत ही अच्छा कार्य किया था। यह उनके और ईश्वर चन्द्र विद्याासागर, राजा राम मोहनराय जैसे सुधारकों के प्रयत्नों का ही फल था कि 1856 में विधवा विवाह कानून बनाया जा सका। उसके पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदों का हवाला देकर, पंडितो के विरोध को काफी हद तक खत्म कर दिया। आज आर्य समाज विधवा विवाह में बहुत मुश्य भुमिका निभा रहा है।

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, ICICI Bank - 659201411714, **IFC Code - ICIC0006592**
3. **आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.**
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

पितृ यज्ञ और श्राद्ध

'यज्ञ' शब्द का अर्थ है त्याग व दान अर्थात कल्याण व परोपकार का कार्य।

भगवान श्री कृ".k गीता में कहते हैं कि–––जो व्यक्ति बिना यज्ञ किए भोजन करता है वह अन्न नहां पाप खाता है। यही नही, आगे कहा है कि जो यज्ञ परोपकारादि को छोड़ देता है, उसको यज्ञ का स्वामी परमात्मा भी त्याग देता है कयोंकि परमात्मा सवयं यज्ञस्वरूप हैं । परमात्मा स्वयं हर समय मानव और दूसरे प्राणियों के कल्याण के लिये यज्ञ कर रहा है। जिस यज्ञ की बात वेद में की गई है या श्री क".k xkhrk e dj jg g उसका अर्थ है अपने और दूसरों के भले के लिये किया गया प्रत्येक कार्य । स्कूल, कालेज, अस्पताल बनाना, पानी के साधन बनाना, कारखाना लगाना जिस में दूसरो को रोजगार मिले, चाहे आप कितने भी व्यस्त है अपने माता पिता के लिये समय निकालना, असहाय और ज़रूरतमन्द व्यक्ति की सहायता करना और अतिथी की सेवा आदि।

अर्थात जिस कार्य द्वारा आप त्याग व दान करके दूसरे ज़रूरत मन्द व्यक्ति या समाज के ऐसे वर्ग का भला करते हैं जिसे आपकी सहायता की आवश्यकता है उसे यज्ञ कहते हैं। उदाहरण के लिये रक्त दान जिस में किसी अनजान व्यक्ति का जीवन बचता है सव से उंचा यज्ञ है।

परिवार को स्वर्ग बनाने के लिये और समाज रा"V dh 0;oLFkk Bhd j[kus d fy; gekj _f"h;k u eu"; dk ftu ikp ;Kk dk nfud thou e ikyu dju d fy; dgk x;k g] m l e fir ;K Hkh ,d gA

जब हम पितृ यज्ञ की बात करते हैं तो आज के संदर्भ में समझने वाली बात यह है कि माता पिता की सेवा सिर्फ धन देकर नहीं की जा सकती। आज मध्यम और उच्च आय वर्ग मे अधिकतर माता पिता के पास धन की कमी नही है। ज़रूरत यह है कि उनकी आवश्यकताओं का ख्याल रखा जाये। हर एक व्यक्ति चाहे योगी ही क्यों न हो, बुढ़ापे में ऐसी स्थिती में पहुंच जाता है कि उसके लिये टायलेट तक पहुंचना भी असम्भव हो जाता है। और यदि कोई विमारी लग जाये तब तो और भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में धन नहीं बच्चों का सहारा व सेवा चाहिये होती है। ऐसे में अपने सुखों का त्याग का उनकी सेवा को महत्व देना ही पितृ यज्ञ है। हां, बदलते समय में जब कि बच्चे नोकरी के लिये दूसरे स्थानों पर रहते है, दोनो मियां बीवी कार्यरत होते हैं, बजुर्ग भी यह उमीद न करें कि बच्चो सब कुछ छोड़ कर उनके पास आ जायें। उन्हे घर जायदाद का मोह छोड़कर अपने बच्चों के पास चले जाना चाहिये और दिल लगाने की कोशिश करनी चाहिये। अपनी इच्छाओं पर नियन्त्रण सन्यास आश्रम का एक जरूरी पहलू है।

यह सच्चाई है कि जिन परिवारों में बढ़े बूढ़ों की सेवा सत्कार होता है, उन पर ईश्वर की कृपा बरसती है। सच्ची चिरस्थाई खुशी प्राप्त होती है। और जहां ईश्वर की कृपा होती है वहां सब अच्छा ही होता है। हमें याद रखना चाहिये कि माता पिता ने हमें पाला पोसा और बड़ा किया। यही नहीं बहुत बार वे अपने सुखों व आराम का त्याग कर बच्चों को सुख पहुंचाते है। कहते हैं बहुत समय पहले पलवल हरियाणा में एक ग्रामीण महिला अपने दो बच्चों के साथ किसी विहीन स्थान से गुजर रही थी, वहां कोई बृक्ष आदि नहीं था। अचानक जोर के ओले बरसने लगे। ओले बहुत मोटे थे और कहीं कोई स्थान छुपने का न था। मां ने अपने दोनो बच्चों को अपने नीचे लिया और लेट गई। ओले काफी देर तब बरसते रहे। जब ओले बरसने बन्द हुये तो लोगों का चलना फिरना प्रारम्भ हुआ । वे क्या देखते हैं कि बच्चे तो जीवित है पर मां मे प्राण नहीं हैं।

ऐसे में मां बाप का ऋण नहीं चुकाया जा सकता पर सेवा द्वारा कम किया जा सकता है । यही नहीं जब हम ऐसा करते हैं तो अपने लिये भी बच्चों को सही मार्ग बता देते हैं। आखिर बच्चे वही करते है जो बचपन में मां बाप को करते देखते हैं। कहते हैं एक व्यक्ति अपने बूढ़े, अपहंग व लाचार पिता को एक टोकरी में डालकर जंगल में छोड़ने जा रहा था। जब उस व्यक्ति के छोटे से पुत्र ने देखा तो सब समझ गया व पिता से बोला––''पिता जी, यह टोकरी बापिस लाना न भूलीयेगा, क्योंकि जब आप बूढ़े होंगे तो मुझे भी इस की आवश्यकता होगी।''

बीज अच्छे बोयेंगे तभी फल अच्छा होगा।

श्राद्ध करें या न करें

जो मैने आर्य समाज के सर्म्पक में सीखा है उसके अनुसार जीवित माता पिता और घर में दूसरे बजूर्गो की सेवा ही श्राद्ध है। मरे हुये माता पिता या दूसरे प्रिय जनों का श्राद्ध नहीं हो सकता, इसके दो कारण हैं। पहला, जीवित व्यक्ति की ही सेवा हो सकती है और जीवित व्यक्ति को ही खिलाया पिलाया जा सकता है। मरे हुये को नहीं। जब मरे हुये को खिलाया नहीं जा सकता, तो हमारे पित्र कैसे खा लेंगे। दूसरा पण्डितों के खाने से मरे हुये माता पिता कैसे तृप्त हो सकते हैं। जो खायेगा वही तृप्त होगा। एक बार प्रयोग कर देखिये। वाहर यात्रा पर जायें ओर पत्नि को कहें कि या खुद ही दुगना खा लेना या किसी भिखारी को खिला देना मुझे तुप्ती हो जायेगी। तीसरे दिन अध–मरे हुये घर बापिस आओगे। जब आपको खाना नहीं पहुंचा तो मरे हुये माता पिता को कैसे पहुंच जायेगा।

अब सिद्धान्तिक बात पर आते हैं। हम कहते हैं आदमी की मृत्यु के बाद अपने कर्मो के अनुसार किसी दूसरी योनी में जन्म ले लेता है। वह मानव भी हो सकता है और शेर भी। शेर तो खीर खाता नही ंतो पण्डित को खीर खिलाने से आपके पितर जो शेर भी हो सकते हैं, उन्होने खीर कैसे खा ली। इसलिये याद रखें

1 श्राद्ध जीवित माता पिता और घर में दूसरे बजूर्गो का होना चाहिये न की जो कि मृत्यु को प्राप्त हो गये हैं।
2 श्राद्ध रोजाना होना चाहिये न कि साल में एक बार।
3 मरे हुये माता पिता और दूसरे प्रिय जनों का श्राद्ध करने से पण्डितो का ही भला होता है, माता पिता को कुछ नहीं पहुंचता।
4 मृतक माता पिता को याद करना बहुत अच्छी बात है। अगर आप दान पुण्य करना चाहते हैं, खाना खिलाना चाहते है तो किसी अस्पताल, अनाथालय में भोजन भेज दें। या किसी और कल्याणकारी काम के लिये धन दे दें।

इसी वि"k; पर आर्य समाज के भजनोपदशक श्री पथिक का बहुत सुन्दर भजन है।

हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं,
इनके तो हैं एहसान इतने कि कोई गिना सकता नहीं,
यह कहां पूजा में शक्ति, यह कहां फल जाप का,
हो तो हो इनकी कृपा से खत्मा संताप का।।
इन की सेवा से मिले धन,ज्ञान,बल, लम्बी उमर,
स्वर्ग से बढ़कर है आसरा मां बाप का,।।
इनकी तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं,
हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।।
देख लें हम को दुखी तो भर लें अपने नैन यह,
एक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन रात यह।।
भूख लगती प्यास न और नींद भी आती नहीं,
क"V हो तन पर हमारे तो हो उठें बेचैन यह।।
इस से बढ़ कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं,
हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।।
पढ़ लो वेद शास्त्र सब का एक ही मर्म है,
योग्यतम सन्तान का यह सब से उतम कर्म है।।
जगत में जब तक रहे सेवा करें मां बाप की,
इन के चरणों में यह तन मन धन लुटना धर्म है।
यह पथिक वो सत्य है जिस को झुठला सकते नहीं
हम कभी माता पिता का ऋण चुका सकते नहीं।।

Impossible to be a God-seeker and a power-seeker at the same time

It is impossible to be a God-seeker and a power-seeker at the same time. People get addicted to power because of insecurity or a sense of emptiness within. This insecurity and emptiness begins when we distance ourselves from God.

We often run after the creations rather than the Creator. Seek God above all things and you will find peace that the world cannot give and the world cannot take away from you.
When you find Him, you are more powerful than all the world's powers put together.

क्या आत्मा परमात्मा का अंश है?
या क्या आत्मा परमात्मा हो सकती है

यह दोनो प्रश्न सामान्य सुनने में आते हैं। बहुत से मतमतान्तर यह मानते हैं कि आत्मा और परमातमा एक ही है और आत्मा परमात्मा का अंश हैं। यह विचार वैदिक सिधातों के विपरीत है। ऐसा विश्वास करना ईश्वर का अपमान करना है। इसी विचारधारा के कारण ईश्वर के बारे में संशय व दो"k mRiUu gk x;A blh ekU;rk dk dkj.k ;g vYiK tho Hkh ijekrek dh J.kh e i tk tk jgk g vkj lPp b'oj l njh;k cM jgh gA

okLrfodrk ;g g u rk thokRek ijekRek cu ldrh g vkj u gh आत्मा परमात्मा का अंश है। दो वस्तुऐं एक तभी हो सकती है अगर दोनों के गुण सामान हों। इसलिये देखना होगा कि क्या दोनों के गुण सामान हैं। जहां तक जीवात्मां का प्रश्न है , यह 6 गुण ——इच्छा, द्वे"k] i;Ru] l[k] n[k vkj Kku ;g lHkh tho/kkjh;k e ik; tkr gA ijUr ijekrek d x.k vyx g। जीव अल्पज्ञ है, परमातमा सर्वज्ञ है। परमात्मा संसार का रचयिता है, जीवात्मा भोक्ता है,

जीवात्मा कर्म फल से भोगता है, इसलिये उस में सुख दुख के गुण हैं, जब कि परमातमा भोगों से मुक्त है । जब कि जीवत्मा को बार बार शरीर धारण करना पड़ता है, परमात्मा शरीर रहित है। परमात्मा सर्वशक्तिमान है जब कि जीवकी शक्ति सीमित है। इस तरह हम देखते हैं कि दोनो के गुणों में बहुत आसामानता है इसलिये दोनों कभी एक नहीं हो सकते। इस कारण जन्म लेने वाले मनु"; dk परमात्मा मानना या मानने का भ्रम पालना अज्ञानता है।

दूसरा विचार यह है कि क्या आत्मा परमात्मा का अंशं है? इसका उतर यह है कि कोई भी वस्तु दूसरी वस्तु का अंश तभी हो सकती है जब उनके गुण एक हों। उदाहरण के लिये एक बड़े पात्र में दूध पड़ा है और उस में से कुछ दूध निकालकर दूसरे पात्र में डाल दिया जाता है। ऐसी स्थिती में दूसरे पात्र में पड़े दूध को पहले का अंश कहना उचित है। क्योंकि दोनो पात्र में पड़े दूध के गुण एक हैं चाहे किसी भी लैवोटरी में टैस्ट का लिया जाये। परन्तु अगर दूसरे पात्र में पड़ा पदार्थ दूध न होकर कोइ फलों का रस है तो स्वभाविक तौर पर लैवोटरी में टैस्ट के दौरान दोनों गुण अलग— अलग पाये जीयेंगे और ऐसी हालत में कोइ भी समझदार व्यक्ति यह नहीं कहेगा कि दूसरे पात्र में पड़ा पर्दाथ पहले पदार्थ का अंश है। यही हाल परमात्मा और जीवात्मा का है। क्योंकि दोनो के गुण अलग हैं इसलिये जीवातमा परमातमा का अंश नहीं हो सकती।

क्योंकि जीवात्मा परमातमा का अंश नहीं हो सकती इसलिये शरीर धारण करने वाला मनु"; भी परमात्मा नहीं हो सकता।

दूसरा प्रश्न यह है कि क्या जीवात्मा परमात्मा के गुण धारण कर सकती है।

इसका उतर है——नहीं। जीवात्मा ने जब शरीर धारण किया है तो शरीर को छोड़ेगी भी अवश्य। चाहे श्री रामचन्द्र हैं या कृश्ण, उन्होने शरीर छोड़ा और मुत्ये को प्रापत हुये जब कि परमातमा तो सु"टि और प्राणीजगत का रचईता है वह शरीर धारण करता ही नहीं इसलिये जीवात्मा और परमातमा के गुण एक नहीं हो सकते और जीवात्मा परमातमा का अंश नहीं हो सकती।

Single minded pursuit of money impoverishes the mind, shrivels the imagination and desiccates the heart.

Prayer is not asking. It is a longing of the soul, a daily admission of one's weakness. It is better in prayer to have a heart without words than words without a heart.

सम्पादकिय

लव जिहाद और हमारा कर्तव्य आवश्यकता है सर्तकता की

आज लव जिहाद चर्चा में है। परन्तु आम हिन्दु और हमारे हिन्दु समाज के बच्चे, नवयुवक और नवयुवतियों अभी भी इस से अनभिज्ञ हैं। कारण हम अपने घरों में खुल का बात नहीं कर पाते। जो मध्यम आय वर्ग है उस का सारा ध्यान एक ही बात पर है और वह है बच्चों का कैरियर। जब कैरियर की बात है, वहां मां बाप और बच्चे दोनो किसी दूसरी बात पर ध्यान ही नहीं देना चाहतें। बे कहते हैं धर्म, समाज, देश की बात बाद में सोचेंगे, पहले कैरियर है, और आज यही बात हमारे हिन्दु समाज को खत्म कर रही है। जरा सोचिये, अगर आपके बच्चे ही आपके न रहे तो किस काम का है यह कैरियर। अगर आपकी बेटी ने, मैं कहता हूं I.A.S भी हो, किसी मुसलमान से शादी कर लेती है तो एक बात निश्चित है न तो वह आपकी रही, न आपके समाज की रही और न ही उसके और उसकी सन्तान के आपके किसी बच्चे की सन्तान से सम्बन्ध रहेंगे। यही नहीं अगर आपके लड़के ने भी किसी मुसलमान लड़की से शादी कर ली तो अधिक सम्भावना यही ही है कि वह मुसलमान बन जायेगा। कहने का अर्थ है कि किसी मुसलमान से शादी के बाद आप अपने परिवार का एक सदस्य खत्म ही समझो । कारण उसकी सन्तान भी मुसलमान होगी। और जो भी मुसलमान है उसे यह पहली शिक्षा दी जाती है कि गैर मुसलमान को उसने किसी भी तरह मुसलमान बनाना है। लव जिहाद इसी शिक्षा का हिस्सा है।

जो कुछ बाते समझने की है वे मैं यहां अपनी समझ से लिख रहा हूं। इसे पढ़ कर विचार करें, और अपने बच्चों को भी पढ़ने को दें।

पहला––यह धारणा बिल्कुल गलत है कि हिन्दु और मुसलमान एक है। दोनो हर तरह से अलग हैं। अगर एक होते तो धर्म के अनुसार जिन्हा साहब हिन्दुस्तान को बांट कर भारत और पाकिस्तान दो देश क्यों बनवाते । मुसलमान के लिये धर्म गोण है, वह अपने धर्म के लिये कुछ भी कुर्वान कर सकता है, कैरियर तो बहुत छोटी चीज है। हिन्दुओं के लिये धर्म गोण नहीं बहुत बाद की चीज है।

दूसरा–– मैं यह नहीं कहता कि कोन ठीक है और कोन गलत, कोन सा अन्छा है और कोन सा बुरा पर सच्चाई यह है कि इसलाम और हिन्दु सार्म्पदायों दोनो में स्त्री का स्थान अलग अलग है, उतना ही अलग जितना कि किसी बड़े शहर के सलम और पोश इलाके में रहने में फर्क है। यह भी सत्य है कि दोनों में लोग रहते है और अपने जीवन से खुश हैं। पर पोश इलाके में रहने के बाद झोंपड़ी में जाना बहुत मुश्किल हैं। यह अलग बात है कि भारतीय सिनेमा में यह सब सम्भव दिखता है। हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी बेटीयों को इस फर्क से शुरू से ही वाकिफ करवायें। जब सम्बन्ध बन जाते हैं तो काफी देर हो चुकी होती है। उसे वाकिफ करवायें इस बात से कि उस के पति की तीन पत्नियां और भी हो सकती हैं। उस पर हर तरह कि पावन्दि हो सकती है यहां तक कि वह अगर मर्दो का खेल देख ले तो उसे जेल भी हो सकती है। यही नही उसके और उसके बच्चों के आगे के सम्बन्ध सब मुसलिम समाज में ही होंगे। राम, कृ".k] x| : ukud] n;kuUn] foodkun dk Hky tkuk gkxk D;kfd fdlh Hkh e|lfye ifjokj e| vYykg d| flok fdlh dk ekuuk vkj mldh i|tk djuk l|xhu iki gA mldh ltk eR;| n.M Hkh gk ldrh g| (blasphamy)

तीसरा&&tc rd vkid| cPp| dh 'kknh ugh| gk| tkrh m|l| fdlh opposite sex के मुसलमान से मैत्री न

करने दें। हां अपने sex में चाहे करे, पर वह भी एक दायरे में। हिन्दुओं की शादी हिन्दुओं में और मुसलमानों की मुसलमानों में हो, यही मेरी सोच है। कारण हम दोनों बिलकुल अलग हैं और शादी शुदा हिन्दु, मुसलमान परिवार में हिन्दु के रूप में अस्विकारिय है। इसी तरह शादी शुदा मुसलमान, हिन्दु परिवार में मुसलमान के रूप में अस्विकारिय है। दोनों में से किसी को धर्म बदलना ही होगा। मुसलमान तो ऐसा कर नहीं सकता, इसलिये यह हिन्दु को ही करना होगा।

चोथा––फेस बुक पर जो हमारे बच्चे हर किसी को जाने बिना दोस्ती कर रहें हैं उस पर एक नजर और ध्यान रखने की आवश्यकता हैं। न जाने किसी की असलियत कया हो। यह आप सब के सामने आया है कि किस तरह हिन्दु नाम रख कर भोली लड़कियों को फसाया जाता है। अंकुश लगाने की जगह अपने बच्चों को बतायें कि ऐसा भी हो सकता है। यह जो घटनाये सामने आ रही हैं वे तो निम्न आय वर्ग के हैं, हमारे मध्यम आय वर्ग में तो शोर मचाया ही नहीं जाता और बेटी की भावनाओं को ठेस न लगे, इस लिये उसे मुसलमान को सोंप दिया जाता है। और यह कह कर कुछ देर परदा डाल दिया जाता है कि उसने अपना धर्म थोड़ा ही बदला है। अरे भाई पागल किस को बना रहे हो धर्म तो उसी समय बदल गया जब मुसलमान से शादी कर ली।

पांचवा–– 99% केसिज में लड़कियां ऐसी शादी करके पछताती हैं । उनका जीवन बरबाद हो जाता है। कारण पति कहो या प्रियतम, उस की दिवानगी तो कुछ समय के लिये होती है। उस के बाद मां, बाप, भाई, बहन, दूसरे रिश्तेदार सब चाहिये होते हैं। खासकर जब लड़की एक दम अकेला महसूस करती है। उस से भी अधिक चोट तब लगती है जब मियां दूसरे निकाह के बारे में सोचने लगते हैं। उसे क्या मुश्किल, उसका धर्म तो उस को कहता है। ऐसी हालत में लड़की कहीं की भी नहीं रहती । महज एक आया और अगर पढ़ी है तो सब से गलग जीवन काटती हुई चिता में जल जाती है या कहीं दफना दी जाती है।

छठा––ईसलाम में स्त्री पर तो बहुत पावन्दियां हैं, उदाहरण के तौर पर उसे पर्दा करना है और हर कहीं नहीं जाना। पर मर्द इन सब पावन्दियों से स्वतन्त्र है। इस कारण आप अपनी जवान बेटियो और बहनों को किसी ऐसे स्थान––जैसे कलब, रात्री नाच गाना, गर्भा नाच पर न भेजें जहां मुसलमान अपनी बहनो और पत्नियों के बगैर शामिल हैं

सतवां–– दुनिया का हर मुसलमान दूसरे साम्प्रदायों के लोगों को मुसलमान बनाना अपना धर्म समझता है इस में कुछ गलत नहीं, ईसाई भी करते रहें हैं और कर रहें हैं। हिन्दु नहीं करते तभी तो यह हाल है। हां, छलकपट और ताकत का प्रयोग करना गलत है।

श्री लंका मे खेले जा रहे एक मैच के दौरान, श्री लंका के क्रिकट खिलाड़ी दिलशान व पाकीस्तान के क्रिकट खिलाड़ी अहमद दिलशाद में हुये संवाद घटना ने फिर से यह साबित कर दिया है कि दुनिया का हर मुसलमान दूसरे साम्प्रदायों के लोगों को मुसलमान बनाना अपना धर्म समझता है। यह मैने अपने जीवन में देखा है। उसका ढंग बहुत सरल है, वह आपको कुरान व इसलाम पर पुस्तकें पढ़ने के लिये प्रेरित करेगा। जो आप Hkk"kk tkur g mlh e fdrkc yk dj nxkA e nf{k.k Hkkjr e jgrk Fkk rk mlu LFkkfu; Hkk"kk duM e yk dj nh] tc eu dgk e>k duM iMu ugh vkrh rk fgUnh e yk dj nh A viu सार्म्पदाय की अच्छी बातों को उजागर करेगा। आप पर लगातार कोशिश करता रहेगा। उसके लिये वह खुद भी बहुत समय देता है। यही कारण है कि इसलाम आज दुनिया का सब से तेजी से फैलता सामप्रदाय है।

ऐसा अपने मत के प्रति प्यार हम में क्यों नही? यह सोचने की बात है। दूसरों की आलोचना करना तो बहुत आसान है पर जो उनका अपने मजहव के प्रति प्यार व आदर है वह हम में बिलकुल नहीं है। जरूरत है कि हम भी अपने बच्चें में मजहव के प्रति वैसा ही प्यार लायें पर उस के लिये हर समय कैरियर

शेष पृष्ठ 9 पर

Editorial

Respect the existence and might of cosmic forces

In the first hymn in the Shanti Karamam of Rig Veda a prayer is made to God: " Oh God, the natural resources and cosmic forces like fire, water, air, space, earth of which entire Universe is made, may be auspicious for our sustenance and these may bring peace and prosperity to us. In the second part it is said 'Save us from their wrath which comes with disaster, destruction and resultant diseases to mankind.

विद्युत अग्नी पवन चर सारे, सुख सौभाग्य बढ़ायें

रोग–शोक भय त्रास पास हमारे कभी न आयें।।

सबका पो"kd–– धारक ईश्वर सदा शान्ति बरसावे।

भूमि, पर्वत, मेघ, देव, सदा सुख शान्ति बरसावे।

आचमन मन्त्र में हम कहते हैं––हे परमेश्वर आपका यह जल हमारे लिये कल्याणकारी हो।

Again in Atharva Veda prayer is made for peace everywhere, as gets manifested from this hymn-- **हे प्रभु शान्ति कीजिये त्रिभुवन में, जल में, थल में और गगन में। हे प्रभु शान्ति कीजिये अन्तरिक्ष में, अग्नि पवन में, औ"k/kh वनस्पति वन उपवन में, सकल विश्व जड़ चेतन में। हे प्रभु शान्ति कीजिये।** *May peace prevail in the skies, May peace prevail on earth, May peace prevail in vast space May peace prevail in the flowing river, May water be soothing and may plants and trees be conducive to health.*

This prayer for peace is made because these cosmic forces have as much potential to cause destruction, as of sustaining our life, when not preserved and respected.

If we go deep we will find that every thing in this Universe when not handled properly or when we try to play mischief with its natural behavior turns violent and then it hits back at us. Even the most docile animal like cow has the potential to turn violent. Same is true of these cosmic forces. For example, when we try to restrict the flow of river, it starts overflowing at one point or the other and causes devastation.

Man by nature is adventures and is curious to know more and more about the nature. But knowing is one thing and to invade is other. Today man has invaded the natural resources and has challenged their might. Since ages seekers of truth had been going to mountains but on foot in the spirit of penance. They never tried to disturb nature in their pursuit for knowledge. It is only in last fifty years that man has started invading these places overzealously with mechanized means like Buses, cars, helicopters etc. It is akin to handling the cow by holding it from its horns so naturally we have to remain prepared for counter attack also. Man always enjoyed unique relationship with these natural resources like water and water bodies and would pay obeisance to these but things go wrong when obeisance just becomes rhetoric and we start abusing these.

Solution is to respect the existence and might of these cosmic forces. They have to be loved and respected as we do to our own child. We massage our child with the best oil, try to give most nutritious food and take care of all his needs. The calamities what we witnessed in Utrakhand and now in Kashmir have a lesson for us that we need to respect and love theses cosmic forces and earth planet.

मरहम

सीता राम गुप्ता

एक बुढ़िया थी जो बेहद कमज़ोर और बीमार थी। रहती भी अकेली ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतनी कमज़ोर थी कि ख़ुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ थी। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। एक दिन बुढ़िया ने पास से गुज़रनेवाले एक युवक से कहा कि बेटा ज़रा मेरे कंधों पर ये दवा मल दे। भगवान तेरा भला करेगा। युवक ने कहा कि अम्मा मेरे हाथों की उँगलियों में तो ख़ुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?

बुढ़िया ने कहा कि बेटा दवा मलने की ज़रूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी उँगलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर उँगलियों से बुढ़िया के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगी। बेटा, भगवान तेरी उँगलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी ग़ायब सा होता जा रहा है।

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के दौरान युवक की उँगलियों पर भी कुछ मरहम लग गई थी। यह उस मरहम का

ही कमाल था जिससे युवक की उँगलियों का दर्द ग़ायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनो हाथों की उँगलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। **तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाता है उसके ख़ुद के ज़ख़्मों को भरने में देर नहीं लगती।** दूसरों की मदद करके हम अपने लिए रोग–मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु ही सुनिश्चित करते हैं।

फोन नं. 09555622323

पृष्ठ 6 सम्पादकिय का शेष

कैरियर की दुहाई को भूल कर उसे अपने साथ मन्दिर व समाज ले कर जाना होगा। आज हिन्दु परिवारों में मिल कर खाना नहीं खाते, मन्दिर जाना तो दूर की बात है। सप्ताह में 168 घंटे होते हैं, क्या एक घंटा हम सब इकठठे मन्दिर नहीं जा सकते। एक घंटे से न तो पढ़ाई में फर्क पढ़ेगा न ही कैरियर में।

यहां लेखक यह बता दे कि उसका इसलाम से कोइ विरोध नहीं। सभी मजहबों में अच्छी बातें होती है। पर जो लोग इन मजहवों को आगे ले कर जा रहे हैं उन में बहुत से ऐसे हैं जो रास्ते से भटके हुये है। इस लेख को लिखने के दो उदेश्य हैं। पहला––यह समझाना कि इसलाम और हिन्दु धर्म में कोइ मेल नहीं। जब मेल नही तो शादीयां भी सम्भव नहीं। दूसरा इसलाम के नाम पर आज बहुत से गलत लोगों ने जिहाद चला रखी है। उस से वाकिफ होना और अपनी सन्तानों को सर्तक करना हमारा फर्ज़ है। हिन्दुओं की शादी हिन्दुओं में और मुसलमानों की मुसलमानों में हो, यही मेरी सोच है।

अगर मेरी बात से सहमत हो तो यह लेख अपने बच्चों को अवश्य पढायें।

बाह्य रावण ही नहीं, ज़रूरी है आंतरिक रावण का दहन भी

सीता राम गुप्ता

आज नायक पूजा नहीं खलनायक पूजा की प्रधानता है। जीवन के हर क्षेत्र में खलनायकत्व हावी है। समाज में हर जगह खलनायकों की भरमार है। राजनीति में बाहुबलियों का बोलबाला है तो ब्यूरोक्रेसी में भ"ष्टाचार का। आम आदमी का जीवन भी इससे मुक्त नहीं है। समाज में सर्वत्र शोशण और उत्पीड़न का तांडव व्याप्त है। कहाँ से आया ये खलनायकत्व का दौरदौरा? जिस प्रकार हमारे बाह्य जगत में विभिन्न खलनायकों का बोलबाला है उसी प्रकार हमारे आंतरिक जगत में भी इन खलनायकों की कमी नहीं और ये आंतरिक खलनायक हैं हमारे अपने नकारात्मक विचार या भावधारा।

हर साल द'ाहरे से पहले रावण के असंख्य पुतले बनाए जाते हैं। उन्हें आकर्शक रूप देने के लिए रंग–बिरंगे काग़ज़ों तथा अन्य सामग्री से सजाया जाता है तथा उनमें बारूद भरा जाता है। प्रश्न उठता है कि एक खलनायक के ही विशाल पुतले क्यों बनाए जाते है? क्यों रावण के पुतले बनाकार रामलीला के समापन पर उनका दहन किया जाता है? हम हर साल रावण के पुतलों अथवा बाह्य रावणों का तो दहन कर देते हैं, उन्हें जला डालते हैं लेकिन हमें अपने आंतरिक रावण के वध की सुधि क्यों नहीं है?

दशहरा अथवा विजयदशमी एक प्रसिद्ध पर्व है जो बुराई पर अच्छाई अथवा विजय का प्रतीक है। राम ने इस दिन आततायी रावण का वध किया था। कौन था वह रावण और क्या तात्पर्य है रावण के वध से? रावण वास्तव में बुराई का प्रतीक है। आज के संदर्भ में देखें तो रावण भ्रश्टाचार, शोशण, आतंक तथा अन्य बुराइयों का प्रतीक है। यही कारण है कि हम प्रतिव"ा रावण का पुतला ही नहीं फूँकते अपितु समय–समय पर मँहगाई, भ्रश्टाचार, आतंकवाद आदि के पुतले भी दहन करते रहते हैं। रावण दहन का अर्थ है बुराइयों पर विजय अथवा उनकी समाप्ति का संकल्प। अब इन बुराइयों का वाहक व्यक्ति भी हो सकता है और समाज अथवा व्यवस्था भी।

रावण का एक नाम है दशानन अर्थात् दस मुखों वाला। किसी आदमी के तो दस सिर हो ही नहीं सकते अतः ये भी एक प्रतीकात्मक शब्द ही है जो रावण के वास्तविक स्वरूप या अर्थ को प्रकट करता है। दशानन का शाब्दिक अर्थ है दस मुखों वाला। अब दस मुख हैं तो वह दसों मुखों से भोग भी करेगा। व्यक्ति की पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेंद्रियाँ हैं। इन्हीं दसों इंद्रियों से सदैव निरंकुश भोग करने वाला ही तो वास्तव में दसानन अथवा रावण है। रावण प्रतीक है निरंकुश भोग का तथा रावणदहन का निहितार्थ है मनु"य का अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण द्वारा स्वयं को संयमित करना।

विजयदशमी शब्द भी मनु"य द्वारा दसों इंद्रियों पर विजय का प्रतीक है। अब प्रश्न उठता है कि दसों इंद्रियों पर विजय कैसे संभव है? क्योंकि इंद्रियों का स्वामी है मन अतः मन पर नियंत्रण द्वारा ही वास्तविक विजय संभव है। मन पर नियंत्रण का अर्थ भावों कर दमन नहीं अपितु उनका वहि"कार करना है। उदात्त मूल्यों से युक्त सकारात्मक भावों द्वारा ही सतही या अनुपयोगी व घातक भावों से मुक्ति संभव है। सकारात्मक भावों के विरोधी भावों से बचाव भी आवश्यक है। इसके लिए सकारात्मक भावों को दृढ़ से दृढ़तर करते जाना अनिवार्य है।

मन को शांत–स्थिर अवस्था में ले जाकर हम सकारात्मक भावों को पु"ट कर स्थायित्व प्रदान करने में सक्षम हैं अतः मन का प्रशिक्षण भी अनिवार्य है। ध्यान–साधना द्वारा मन पर नियंत्रण भी संभव है और अपेक्षित भावधारा का निर्माण भी। भावों पर नियंत्रण, तदुपरांत उत्तम विचारों की

स्थापना अर्थात् भावों का शुद्धिकरण मन की तपस्या है। यही साधना है। मन की सकारात्मक वृत्ति द्वारा ही हम आंतरिक और बाहरी शत्रुओं को स्थायी रूप से जीत कर निर्द्वन्द्व जीवन व्यतीत कर सकते हैं जो सुखी और सफल जीवन का सूत्र है।

राम–रावण युद्ध से पूर्व विभी"ाण चिंतित होकर राम से पूछते हैं कि न तो आपके पास रथ है और न तन की रक्षा के लिए कवच और न जूते ही तब रथ पर सवार बलवान वीर रावण को कैसे जीता जाएगा? राम कहते हैं कि जिस से विजय होती है वह दूसरा ही रथ होता है और उस रथ की व्याख्या करते हुए राम कहते हैं :

अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना।।

संसार रूपी युद्ध को जीतने के लिए निर्मल और स्थिर मन तरकश के समान है। अर्थात् मन का वश में होना तथा यम और नियम ये बहुत से बाण हैं। इनके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं। यही वास्तविक विजय है और इसी में निहित है विजयदशमी का यथार्थ संदेश। जब तक हम अपने अहंकार रूपी आंतरिक रावण का वध नहीं करते विजयदशमी या विजय का उत्सव नहीं मना सकते।

फोन नं. 09555622323

Last lesson

They tell of a very rich and smart man who lived many years ago in a city far away. Though he had a big family, a wife, children and grandchildren, but his sons and their children were living separately. He was generous to all of them and was loved and respected by them.

One day his wife passed away and he was left alone in a big palatial house. After the mourning period, his children came to him and said "Oh revered one, we request you not to stay alone and live with us. We will not let you feel any scarcity and all your needs will be taken care of."

The man agreed and moved to his eldest son. All his sons and their wives would take good care of him and he was quite satisfied. After some time he thought to himself, "Of what use is my house and other possessions. I should sell these and distribute the wealth amongst them during my life time only." He executed his plans and distributed his wealth to his sons.

In the initial few months he never felt the scarcity of any thing. His sons would take care of all his needs. His children visited him regularly. But slowly, the children and grandchildren stopped showing their faces. At the house, his elder son also became non-caring and the old man would feel ignored. The condition became such that he would get his daily needs, only when he would lierally beg from the servant. Family members would turn their backs to his beseeching eyes. He would regret his decision but now it was too late. One day one of his old friends visited him and he was pained to see him in such a miserable consition. They discussed something.

Next day the friend visited him again when his son was also present and said to his eldest son, " You see I am leaving this place to live with my son. This is the key of a suitcase in which your father had kept precious jewellary. Other key is with your father. For opening the box, both the keys should be used simultaneously. This key I am carrying but would be made available to you only when my friend says or he dies."

When everyone gathered, the man said: "I had told you that I sold everything, but that wasn't the truth. As my friend disclosed, I still have a suitcase filled with gold and jewellery, which is kept under the tree in our backyard. But keeping in view the past experience, I will give the keys to the one who takes care of me until my death. "

Everyone was very excited to hear this, and from that day the man was not only served well but was placed on a high pedestal with all comforts and goodies at his disposal and he lived the rest of his life in peace.

After his death, his family gathered around the big tree and one of them began digging. Indeed they found the big suitcase and with great ceremony opened it also with the two keys.

But inside, all they found was a huge image of a donkey carrying an envelope. The envelope contained a letter with only one line.

"**Only an ass gives everything away too soon.**

कटु व्यवहार का बदला सद्भावनायुक्त व्यवहार से दें।''

नीला सूद

किसी के अपकार का बदला अपकार से देना या आंख फोड़ने वाले की बदले में उसकी भी आंख फोड़ देना उचित हो सकता है परन्तु इसके हानिकारक प्रभाव भी हो सकते हैं। चाहे आप युद्ध जीत लें परन्तु दिल के एक कोने में आपको कुछ खालीपन का अनुभव होता है और लगता है कि आपकी कोई मूल्यवान वस्तु आपसे दूर हो गई है। महात्मा गांधी के शब्दों में, ''आंख के बदले दूसरे की आंख को फोड़ने का परिणाम संसार को अन्धा कर सकता है।'' समय बीतने के साथ किसी समय उपलब्धि दिखने वाली यह बात, निराशा व पछतावें में बदल जाती है। ऐसी परिस्थिति में, अपने प्रतिशोध को पूरा करने का दूसरा सुन्दर उपाय भी है और वह है कि कि हमारा बदला ऐसा हो कि दूसरे का हृदय परिवर्तन कर दे और आपसी वैमनस्य को खत्म कर आपसी सम्बन्धों को सुधार दे। ऐसा करने से गलत काम करने वाले के मन में एक नया परिवर्तन होता है। अक्सर ऐसा करने पर विरोध मित्रता का रूप ले लेता है जो कि एक उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती है। ऐसा करने से हमारे मित्रों की संख्या में वृद्धि होती है और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिसके जितने अधिक मित्र होते हैं वह उतना ही अधिक इस धरती पर स्वयं को सुखी व सन्तु"ट अनुभव करता है।

जैसा हम जानते हैं बर्लिन की दीवार पूर्वी बर्लिन और पश्चिमी बर्लिन को बांटती थी। कुछ पूर्वी बर्लिन वासियों ने पश्चिमी बर्लिन वासियों के प्रति गहरा द्वेश भाव अपने अन्दर उत्पन्न कर लिया था। इसी द्वेश भाव के कारण पूर्व बर्लिन वालों ने पश्चिम बर्लिन वासिया का अपमान करने के लिये एक ट्रक में कूड़ा, ईंट के टुकड़ें और अन्य अनापश्शनाप व्यर्थ की वस्तुयें भरकर चोरी छिपे पश्चिमी बर्लिन वासियों को एक टैंकर में भेजीं। जब पश्चिमी बर्लिन वालों को इसका पता लगा, तो वह इससे कुपित हुए और उन्होंने चाहा कि वह भी उसके बदले में वैसा ही व्यवहार करें। पश्चिम बर्लिन वासियों ने पूर्वी बर्लिन वासियों को एक ऐसा उपहार भेजने का निर्णय किया जिससे कि उनके किये गये अपमान का उचित बदला लिया जा सके। उनमें से एक बुद्धिमान व्यक्ति को जब पता लगा तो उसने उनको परामर्श दिया कि उनके भेजे सामान के बदले में उनको भोजन, कपड़े और चिकित्सा का सामान, दुर्लभ वस्तुयें एवं मूल्यवान पदार्थ भेंजे। उन्होंने, उस सामान के साथ एक पत्र भी रखा, जिसमें कहा गया था कि हर कोई अपने सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार देता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पश्चिमी बर्लिन के इस उदारपूर्ण कार्य से दोनो पक्षों में विश्वास का भाव एवं अच्छे सम्बन्ध पैदा हुए।

बुद्धिमान मनु"य महान गुणों को जीवन में धारण करते हैं व उनका पालन करते हैं। एक जनूनी धर्मिक अन्धविश्वासी व्यक्ति समाज सुधारक सन्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्धविश्वासों व कुरीतियों के खण्डन एवं सत्य मान्यताओं मे मण्डन से चिढ़कर प्रायः हर समय चिल्लाकर–चिल्लाकर उनके लिए अपशब्दों व गालियों का प्रयोग करता था। एक दिन स्वामीजी का एक अनुयायी उनके लिए फलों की एक टोकरी ले कर आया। स्वामीजी ने तुरन्त अपने एक अन्य भक्त को पास बुलाया और उसे टोकरी में से कुछ फल ले जाकर उस गेरूवें वेशभूशा वाले व्यक्ति को देने को कहा जो प्रतिदिन उन्हें गालियां दिया करता था। उन्होंने उसे यह संदेश भी भेजा––– कि उसे इन फलों की अधिक आवश्यकता है क्योंकि स्वामीजी के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उसे गालियां देने में अपनी भारी ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। स्वामीजी का भक्त स्वामीजी की यह बात सुनकर हतप्रभ रह गया पर स्वामीजी की इच्छानुसार उसने उस व्यक्ति के पास जाकर उसको फल देकर स्वामी जी का सन्देश भी दे दिया। वह व्यक्ति स्वामीजी के उस व्यवहार से चकित रह गया और स्वयं को लज्जित अनुभव करते हुए उनके पास क्षमा मांगने जा पहुंचा। उसका हृदय परिवर्तन हो गया और वह उनका अनुमागी भक्त बन गया। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि उदारता व दान आदि गुणों को धारण करने से शत्रु को मित्र में बदला जा सकता है। यह प्रतिशोध के पवित्र तरीके को अपनाने से मिलने वाली शक्ति है।

प्रतिशोध की भवना से अन्धे होकर आंख के बदले आंख लेने की जगह इस प्रकार के प्रेम युक्त मधुर व्यवहार को अपनाकर आज के युग में शत्रुता के रवैये को मित्रता में बदला जा सकता है खास कर जबकि आज द्वेश भावना व इससे उत्पन्न हिंसा ने सबमें परस्पर डर पैदा किया हुआ है। यह स्थिति मानवता के लिए शर्मनाक है।

DISCIPLINE

Prof. S P Puri

'Discipline is the bridge between goals and accomplishment.' –**Tom Rohn**

'To enjoy good health, to bring true happiness to one's family, to bring peace to all, one must first discipline and control one's own mind. If a man can control his mind, he can find the way to enlightenment and all wisdom and virtue will naturally come to him.'–**Buddha**

'Do not train a child to learn by force or harshness, but direct him to it by what amuses his mind, so that you may be better able to discover with accuracy the peculiar bent of the genius of each.'– **Plato**

'Discipline is the refining fire by which talent becomes ability.'–**Roy Smith**

'It is not the work that is hard, it is the discipline.' –**Anonymous**

Boys of muscle, brain and power are needed every hour, so goes a popular saying. This is achievable if in our early life, we emphasize on energy, power and originality and in the later part of our life, the qualities in focus are character, personality and soul; provided discipline is the hallmark of our living style. Energy implies physical, mental and moral energy and these are to be acquired and cultivated. Power is defined as rate of doing work and thus implies handling our job efficiently. The originality in us implies the stamp of our identity and personality. However these qualities are attainable only by leading a life of discipline. Without discipline, no one can dedicate him or her to a worthy cause. In our formative years, a thorough attempt is to be made to imbibe these qualities of character, so that we can play our part well in the course of our existence. Nothing of consequence was ever attained without discipline.

If the stray electrons are made to flow in a wire, it constitutes an electric current which can be put to myriad uses. If the rain water is collected at a high altitude place, a dam can be built. The potential energy of the water in the dam can be converted into electric power by a turbine and electricity produced will light our homes and factories.

We waste many hours in idle gossip and small talk which if saved can be utilized for some productive activity. The history is replete with examples where the spare moments were used in creating a beautiful poem or making a useful invention. The famous poem "Psalm of Life" was written by Henry Wadsworth Longfellow while preparing tea. An American president used to carry a book in his pocket which he will read while the meals are being served. Thus never underestimate the power and potential of small hours in creating worthwhile contribution, since many a little makes a mickle.

394. Sector 38A, Chandigarh-160014

Prof. S. P. Puri, a renowned academician, ex U.G.C. Emeritus Fellow, was Professor and Chairman, Department of Physics, Panjab University, Chandigarh.. He had uninterrupted university positions throughout his academic career. He was one of the earliest in the country to establish the studies of Nuclear Gamma-Ray Resonance (Mössbauer Effect) in Roorkee (U.P.) in 1963

******

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी,
कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

अपमान

अशोक कुमार

विधि नहीं अपमान किसी को शरणागत करने की,
सरल-स्वभाव, सहजता-सजगता, वाणी से होता है आदर निर्माण,
चुनौती समझ शपथ ली जिसने, वही उड़े आसमान ।

द्रोपती को भरी सभा में वस्त्रहीन करने का प्रयास, एकलव्य को विश्व का सर्वश्रैष्ट धनुर्धर बनने से रोकना, करण (राधे) की जन्म घटना को छिपाना, सुक्रात को अधिक बुद्धिमत्ता-ज्ञान हेतु जहर पीना पड़ा, विभीषण को लंका से निस्कासित करना, या धार्मिक आस्थाओं से जुड़े मुद्दों, सामग्री पर आक्रमण और खण्डित करना, मंगल पाण्डे का विद्रोह जो धर्म भ्रष्ट होने कारण हुआ, शिवाजी को जातीय आधार हेतु राजकीय प्रोहितों द्वारा राज्यभिषेक न करना, कन्याओं का जन्म प्रतिष्ठा पर आहत समझना आदि ये सब घटनाऐं अपमान की पुष्टि करती है। कभी कभी निर्धनता को अपमान रूप में भी लिया जाता है।

अब अध्ययन करें कि अपमान है क्या? मान क्या है? तो ये कहना असत्य नहीं होगा कि मान-अपमान एक ही सिक्के के दो पहलू है। मान-आदर से व्यक्ति का रूतवा बढ़ता है, व्यक्तित्व सुमन समान हो जाता है, जो सदैव देव के चरणों में रहता है। अपमान-निरादर से लज्जित होना पड़ता है, अपमान सदा शूल होता है, जो एक अंगारे के समान हृदय में किसी कोने में सुलगता रहता है। अपमान एक ऐसी मनौविज्ञानिक धारणा है, कभी अस्थाई होती है, कभी जीवन लेवा बन जाती है, अपमान के बारे थोड़ा ओर विचार करें तो कह सकते हैं कि जब किसी को उसकी योग्यता, समर्था, क्षमता अनुसार मान -समान से वंचित रखा जाये या कोई स्वंय का उच्च मूल्यांकन करना हो तो अपमान क्रिया आरम्भ हो जाती है। सरल भाषा में अपमान का अर्थ है किसी को समाज में नीचा दिखाना, दिये तर्कों को काटना, आयु-अनुभव संबंधों की गरीमा न रखना, छल-कपट से कुछ हथियाना, किसी की मूल्यवान आहुति का अनादर करना। और विस्तार से जानें जैसे कि बच्चे पारिवारिक, माता-पिता नियमों की अवहेलना करें तो अपमान आरंभ हो जाता है। कभी कभी भरोसा भ्रम बन जाये, आश्वासन मिट जाये, सेवक-सेविकी भूल जाये या अनादर शब्दावली प्रयोग होने लगे तो वह भी अपमान है।

कुछ का कहना है कि दूसरों को दुखःदर्द दे कर स्वयं सुख आनंद मानना, किसी के स्वाभीमान को आहत करना, कभी-कभी अपूर्ण स्नेह-प्यार न मिलना, उस क्षतिपूर्ति अधीन किसी का अपमान करना। इसके अतिरिक्त अपने प्रतिरोध हेतु किसी को झूटा, लज्जित करना भी अपमान है। कुल मिलाकर अपमान, गंभीरता, तनाव, प्रदानता क्रिया है। वैसे तो हर पंथ, धर्म समाज में अपनी निश्चित नियम है जिनकी अवहेलना करने पर दंड सुनिश्चित है। इस प्रकार अपमान एक दंड पद्वति है। आवश्यक नहीं अपमानित करने वाला शारीरिक चोट करे। अपमान में एक ऐसा आघात करना होता है, लाठी भी रह जाये और सांप भी मर जाये अर्थात हृदय में घाव हो जाये मस्तिष्क में सुनामी आ जाये। अपमानित प्रतिक्रिया श्रेष्ट व्यवहार, प्रतिष्ठता न मिलने की स्थिति भी है जिससे भावनाओं को चोट करना और संवेदनात्मिक प्राक्रम आरम्भ हो, भेद-भाव करना, गोपनियता वास्तविकता को बेपर्दा करना। कभी-कभी किसी की उन्नति, प्रगति, स्मृद्धि से विकार उत्पन्न होना और उसी का दुर्जन संदेश प्रसार करना। इस प्रकार अपमान, क्रोध-द्वैष-स्वार्थ का मंथन है और आँखों से विषरूपि वर्षा करना है। जिस व्यक्ति में अपमान-रूपि अवगुण लग जाये उसकी स्थिति एक भूखे व्यक्ति समान होती है और वह किसी को अपमानित किये बगैर उसकी भूख मिटती नहीं, तृपति मिलती नहीं। अपमान के कई अन्य रूप हैं जैसे षड़यंत्र रचना, चुगली करना, अफवाहें फैलाना, सहचार्या न रखना, सीधे मुंह उत्तर न देना, त्रुटियां निकालना, किसी की तुलना ढौर या ऐसे ऐतिहासिक पात्र से तुलना करना जो इतिहास में अप्रशंसनीय रहा हो या किसी को भंगी कहना। अपमान बदले की भावना का रूप है, अपनी बुद्धि, ज्ञानता, अनुभव की बहुमूल्यता का व्याख्यान है, जब अपनी सत्ता सामार्थ्य टूटती नजर आये तो उसकी सुरक्षा के लिए अपमान बाणों को छोड़ा जाता है। अपमान उपहास व्यंग्य रूप, गीत कविता के रूप में भी किया जाता है। अपमान शान्ती संदेश

नहीं है, अपमान करने वाले भीतर से अप्रसन्न होता है। जब अभिमान युवा हो जाता है तो केवल 'स्वयं' ही नजर आता है, शेष व्यर्थ लगता है। जब चींटी समान पर लग जाते हैं तो चींटी का परिणाम हर कोई जाता है। अपमान संकेतिक, शब्दायिक, लिखित भी होता है। किसी के शरीर पर अनैतिकता रूपी शब्द लिखना, अप्राकृतिक क्रिया या अश्लील चल चित्र बनाना। अपमान के कुछ नये रूप समाज में उभर रहे हैं जैसे किसी नेता की सभा में हल्ला-गुल्ला करना, स्टैज छोड़ने को आग्रह करना, नेताओं पर जूता फैंकना, कभी कभी किसी की परफोरमेंस उपरान्त ताड़ीयाँ न मारना इत्यादि। ऐसे करने से बुद्धि जीवियों की विचारधाराओं को तोड़ना, उन्हें परेशानी में डालना, उनको आलोचना के आवरण से ढकना आदि भी अपमान है।

मेरा मानना है कि वर्तमान में अपमानिता एक रोग है जब अपनी अवैगपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति, सामाजिक प्रतिबंधों, जीवन समस्याओं के कारण पूर्ण होती न दिखे तो अपमान क्रिया आरंभ हो जाती है। जब वैभव, गौरव, संतुष्टि ना मिले तो भी किसी का अपमान करना प्रभावशाली लगता है। यदि कोई हमराज न रहे तो भी यह सकर्मक रोग लग जाता है। अपमान किसी को पाठ सिखाने के लिए बैसाखी का काम भी करता है। पर कभी कभी अपमान वरदान बन जाता है जैसे-कालीदास को विद्योत्तमा की फटकार ने शकुंतला और मेघदूत की रचना करने योग्य कर दिया। अंत में किसी की प्रतिभा, मनोबल वृद्धि हेतु भी किया जाता है।

अपमान का विश्लेषण करें तो अपमान कभी दण्ड बनें, कभी दंभ बने कभी किसी का दमन करे या दुष्टता उत्पन्न करे। इस प्रकार अपमान एक योग क्रिया, एक पाठ्य-प्रणाली, एक शक्ति, कुछ करने के लिए सोच परिवर्तित निर्देषात्मक, विश्वास सुदृढ़ता औषधि है, गेहन करे तो भीतरता को सक्षमशाली बनाने का योग है कुछ लोग अपमान को सीढ़ी बनाकर उपर उठना चाहते हैं अक्सर समतल से वो दुर्बल होते हैं। अपमान कुछ लोगों के स्वभाव का अटूट अंग बन जाता है। किसी को दंड देते हैं तो अपमानित भाषा, उपदेश देते हैं तो अपमानित भाषा, प्रसंशा करते हैं तो अपमानित भाषा, प्रेरणा, परितोषक, प्रतिष्ठता देते हैं तो अपमानित भाषा का प्रयोग करते हैं। ऐसे लोग दूसरों को भड़काते हैं, उकसाते हैं, उत्तेजित करते हैं। हो सकता है वह निरादर भावना रहित हों पर दूसरों को वह नाकारात्मक लगते हैं, ऐसे लोग सामाजिक तौर पर समृद्ध, प्रतिष्ठता पात्र नहीं होते। ओशो कहता है कि एक बहुत गहरा नियम है कि हम दूसरों को वही देते हैं जो हमारे पास है इससे यह स्पष्ट है कि ऐसे लोगों में अपमान भरा पड़ा है जो वह वितर्ण करते हैं अर्थात अपमानित कर्ता हिंसा तत्व है, स्वस्थ्य नहीं है और स्वयं को ही अपमानित कर रहा है।

मनुष्य को विपत्तीयों, विशमताओं का मुँह तोड़ जवाब देना सीखना होगा, असफलताओं से पाठ लेना होगा, आदर उन्हीं का होता है जो निषकाम कर्म करते हैं, दूसरों के लिए सर्वसब खो देते हैं, मान प्राप्ति के लिए धैर्य, त्याग, साहस, पुरूषार्थ, परिश्रम सत्य के मार्ग पर चलना होगा, अपनी क्षमता को केन्द्रित करना होगा, योग्यता को आभूषित करना होगा, भीतरता से चैष्टा करनी होगी, संदेह भगाना होगा। कृतार्थगुण उत्पन्न करना होगा। जो किसी को अपमान से दंडित करता है वह भीतर से विचलित होते हैं। आपको सोचना होगा, क्या मान, आदर आपकी ही सम्पदा है, क्या उसके लिए आप ही उपयुक्त, योग्य है, विवेकानंद अनुसार हर एक को अपने सम्मुख एक साध्य रखना चाहिए। उसकी धुन हो, लगन हो, तभी सफलता मिलती है, इसीलिए अपनी पहचान बनाओ। कुविचारों का त्याग करो। अपमान तो केवल अधर्म, अन्याय, अज्ञानता, प्रलोभन, स्वार्थ और जाति मतभेद का करो। अपमान करना अध्यात्मिक गुनाह एक विष पैदा करना है और विष का परिणाम मृत्यु है। अपमान योजना आधारित होता है जिससे व्यक्तिगत संतूलन बिगड़ता है, अनाचार उपजता है, स्वयं की ही क्षति अंकूरित होती है, सत्य का आभाव होता है, स्वयं को अपाहिज करता है, फिर आत्मा रोती है, लोकप्रियता समाप्त हो जाती है। जब अभिमान युवा हो जाता है तो स्वयं का ही सर्वनाश हो जाता है।

उप-आबकारी और कर कमीशनर, सेवा निवृतब्द्ध, पंजाब।

Lighter Moments

One day Banta, who was working as an aero plane cleaner was cleaning the pilots' cockpit when he saw a book entitled 'How to fly an aero plane for beginners.' Volume---I. He opened the first page which said, "To start the engine, press the red button.". He did so and the airplane engine started. He was happy and opened the next page. "To set airplane moving, press the blue button." He did so and the aero plane started moving at an amazing speed. He wanted to fly so he opened the third page which read, "To let the aero plane fly, please press the green button." He did this and the plane started to fly. He was excited!!!!!! After 20 minutes of flying, he was satisfied and wanted to land so he decided to go to the fourth page.

He fainted after reading the instructions……. 'The fourth page read, "To learn how to land, please purchase Volume ---II at the nearest bookshop!!!!

अवतारवाद, भगवान एवं ब्रह्मा–विष्णु–महेश

दीनदयाल बिष्ट,

पूर्व वैदिक काल में अवतार की श्रृखला नहीं मिलती। कालान्तर में हिन्दु धर्म में महाकाव्य एवं पौराणिक युग में अवतारवाद की अवधारणा विकसित हुई

अवतार – ''एक मानव 'शरीर में देवत्व अपने आपको छिपा लेता है और उसी के माध्यम से उसकी महिमा प्रकट होती है।'' एनी बेसेंट। हम सब अपने भीतर दैवीय शक्ति लेकर जन्में हैं, हम सब के भीतर ईश्वर का तेज छिपा है। कलाम जिस किसी महामानव ने fo'k"k परिस्थितियों के फल स्वरूप लोकोत्तर प्रतिभा और शक्ति प्राप्त कर ली और उसका प्रयोग मानव जाति के कल्याण के लिये किया, तो उसे सर्वसाधारण ''भगवान'' मानकर पूजने लगा। राम; कृ"ण, हनुमान आदि की पूजा इसी भाव से की जाती है। भग का अर्थ है; ऐश्वर्य, और भगवान का अर्थ हुआ,सभी प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न व्यक्ति। इसीलिये देश–देशान्तरों में अनेक महापुरुशों की विभिन्न विधियों से पूजा–अर्चना की जाती है। उनका आभार व्यक्त करने और अपने में उनके सद्गुणों का आधान करने के लिये। आपने अक्सर असहाय और विपत्ति में फंसे लोगों को कहते सुना होगा ''आप तो मेरे भगवान हैं''। इसी प्रकार अनेक बार ''देवता'' शब्द का प्रयोग किया जाता है। ''यः स्तूयते स देवः'' जिसकी सब मनु"य प्रशंसा करते है और जो सदविचार; ज्ञान आदि देने की क्षमता रखता है। अनेक बार पेड़–पौधे; गाय आदि प्राणियों और यहां तक कि सूर्य; चन्द्र; नदी आदि जड. पदार्थों को देवता की संज्ञा दी जाती है; क्योंकि वे जीवन उपयोगी पदार्थ देने की क्षमता रखते हैं।; उनकी रक्षा हेतु जल आदि चढ़ाया जाता है और आदर भाव प्रकट करने के लिये अनेक बार भावावेश में हाथ भी जोडे जाते है। आम शब्द है; अमुख व्यक्ति तो ''देवता'' है इत्यादि।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में जब कि विद्यालयों में प्रारम्भ से ही विज्ञान की शिक्षा दी जा रही है और आधे से अधिक विद्यार्थी विभिन्न शाखाओं में विज्ञान का अध्ययन कर स्नातक बन रहे हैं; इसके बाद भी समाज में वैज्ञानिक सोच नहीं पनप पा रही है, अधिकांश जनता अंन्धविश्वास से धिरी हुई है, और भूत–प्रेत; जादू टोना टोटकों में फंसी है। यह बात समझ से परे है। मित्र मण्ड़ली में वार्तालाप के दौरान मेरा कथन होता है; कि यदि घोड़े के नाल की अंगूठी पहनने से किस्मत बदलती है और आपके नाम के आंग्लभा"ाा के पहले अक्षर के आधार पर भवि"य वाणी की जा सकती है; तो लाल चटनी के साथ समोसा खाने से भी किस्मत को बदला जा सकता सकता है। वास्तव में कुछ व्यक्तियो में बुद्धिमत्ता के साथ नैसर्गिक काल्पनिक प्रतिभा होती है और वे अपने व्यावसयिक गुण के कारण परेशान और मजबूर लोगों के समूह को भ्रमित या संमोहित कर अपना उल्लू सीधा करते हैं। आपने कभी ध्यान से देखा है, वे आपसे ही पूछकर आपकी समस्या बता देते हैं। आपने कभी ध्यान से उनके चेहरे के हाव–भाव देखे हैं, उनके चेहरे पर स्वाभिमान पूर्ण प्रसान्नता का भाव होता है; ये मजबूर लोग कैंसे बिना बनाये अपने आप बेवकूफ बन रहे हैं और धन की लालसा से उल्टा मेरा ही भण्ड़ार भर रहे हैं। हमारे देश में कुछ चालाक लोग अपनी स्वार्थ सिद्धि और आजीविका चलाने के लिये धर्म के नाम पर व्यापक रूप से अन्धविश्वास फैलाने में लगे हैं। ऐसे ही लोग आर्यसमाज का तीब्र विरोध करते है। उन्हें अपनी रोजी–रोटी पर खतरा नजर आने लगता है।

प्रसंगवश बहुश्रुत, ब्रह्मा; वि"णु; महेश पर विचार

विमर्श संगत होगा। आधुनिक वैज्ञानिकों की तरह प्राचीन वैज्ञानिकों (ऋषि–मुनि) ने भी पूर्वकाल में सृष्टि को समझने का प्रयत्न किया। यह सृष्टि कैसे बनी, इसका संचालन किन शक्तियों द्वारा हो रहा है और ये शक्तियॉ किन नियम और सिद्धन्तों के तहत कार्य करती हैं? संम्भवतः वे इस निष्कर्श पर पहुचे; कि इन क्रिया–कलापों को समझने के लिये इन्हें तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाना उपयुक्त होगा। अपने विचारों को मूर्त रूप देने के लिये उन्होंने तीन सार्थक शब्दों का प्रयोग किया। ब्रह्मा; विश्णु और महेश।

ब्रह्मा– अव्यक्त से व्यक्त अर्थात् दृश्यमान सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माता। विष्णु– पालक और विश्व–सृष्टि नियंत्रक। वर्तमान में हमें ज्ञात है; कि सम्पूर्ण सृष्टि विशुद्ध शक्ति (Energy) रूप है; और पदार्थ शक्ति के घनीभूत रूप हैं। चरक संहिता,शारीर 1.67 – ''अव्यक्तात् व्यक्तताम् याति व्यक्तात् अव्यक्ताताम् पुनः। रजः तमोभ्याम् आविश्टः चक्रवत् परिवर्तते । अर्थात् यह सृष्टि अप्रकट से दृश्यमान रूप में आई और पुनः प्रलयकाल में अव्यक्त अर्थात् अदृश्य स्थिति में पहुंच जाती है। इस प्रकार रज;और तम गुणों के आधीन सृष्टि का परिवर्तन चक्र निरन्तर चलता रहता है। इसी तरह ''अव्यक्तात व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्ति निरागमे। रात्रागमे प्रलीयन्ते तत्र एवं अव्यक्त संज्ञके।। गीता–8.18। तथा – सर्वभूतानाम् कारणम् अकारणम् सत्व रजः तमः लक्षणम्––– इत्यादि – सुश्रुत संहिता; शारीर–1.3। सम्भवतः सत्व; रज; तम क्रमशः प्रोट्रोन; इलेक्ट्रॉन और न्यूट्रॉन कण हैं। अतः ब्रह्म से ही सम्पूर्ण दृश्यमान जगत का निर्माण हुआ। ब्रह्मा की अर्धांगनी गायत्री–मां, जो हमें ''धियो यो नः प्रचोदयात्''द्वारा सद्बुद्धि की प्रेरणा देकर अपने मातृधर्म को निभाती है। पुत्री– वीणावदिनी ''सरस्वति'' हमें सभी कलाओं में प्रवीण होने को प्रेरित करती है। संभवतः आपने सुना होगा ''अमुख ब्राह्माण ब्रह्मविद्या को जानता है'' अर्थात् वह सृष्टि की शक्ति और संचालन सिद्धातों का ज्ञाता है।

विष्णु – निर्मित जगत का पालनहार। उनकी सहधर्मिणी सेवारत लक्ष्मी है; जो सेवा भाव और श्रम की द्योतक है। लक्ष्मी इस बात की ओर भी इंगित करती है; कि जीवन–यापन के लिये धन–सम्पत्ति का कितना महत्व है। भगवान श्री कृष्ण को विश्णु का अवतार माना जाता है; जो गीता के द्वारा अजेय सफल जीवन जीने की कला बताते हैं। जीवन में आमोद–प्रमोद के महत्व को भी उनके कार्यकलापों से समझा जा सकता है, हलांकि वर्तमान में सामाजिक जीवन स्तर में गिरावट के कारण ; इसका निम्न स्तर दृष्टिगोचर होता है। हमें इस तथ्य को समझना चाहिये; कि ईश्वर हमें सद्बुद्धि; प्रेरणा और आत्मिक शक्ति दे सकता, परन्तु लाख नाक रगड़ने पर भी हमारा काम नहीं करेगा। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिये हमें बुद्धि पूर्वक सही ढंग से कठोर परिश्रम करना होगा। आम कहावत है ''परिश्रम भाग्य की कुंजी है।

महेश – सबसे बड़े महान देवता; समस्त सृश्टि के न्यायाधीश। जो अनुचित; समाज और देश विरुद्ध कार्य करने वालों को दण्ड़ दे कर उनका सुधार करते हैं अतः उन्हें ''शिव'' भी कहा जाता है। आपने ''ताण्डव नृत्य'' शब्द सुना होगा। वर्तमान में हमारे देश और कमोवेश समस्त भूमण्डल पर क्या हो रहा है? विज्ञान और तकनीकी प्रभुता हासिल करने के नाम पर; हमारे उपभोक्तावादी लालच ने पृथ्वी तो क्या समुद्र और आकाश तक को खाने से नहीं छोड़ा है। केदारनाथ और वर्तमान में काश्मीर की भयावह त्रासदी क्या है? क्या हमने कभी इस पर चिन्तन किया है? खैर; सोचिये; आदमी के लालच की कोई सीमा नही है। समय रहते हमें इस तथ्य को समझना होगा; कि पर्यावरण को नश्ट कर हम बचे नहीं रह सकते। पर्यावरण अभिन्न रूप से हमारे जीवन से जुड़ा है। इसका विनाश मानव जाति का विनाश है और इसका जीवन ही हमारा जीवन है।

हमारे एक अन्य भगवान हैं, शिव जी के सुपुत्र गजानन गणपति सर्वविघ्नहर्ता भगवान गणेश जी। हमें ज्ञात है कि वर्तमान समय में चिकित्साशास्त्र की अभूतपूर्व उन्नति के बावजूद आदमी के धड़पर जानवर का सिर लगाना किसी भी हालत में सम्भव नहीं है। यह केवल मात्र प्रतीकात्मक है। वास्तव में यह इस बात का द्योतक है; कि इतने बड़े आकार और श्शक्तिशाली होते हुये भी हाथी कितने शान्त और सौम्य स्वभाव का प्राणी है। वह विशुद्ध श्शाकाहारी है; अपने परिवार के प्रति असीम स्नेह रखता है। उसकी सामाजिक व्यवस्था;नेतृत्व और संगठन इन्सान से कहीं बेहतर है। आपने सम्भवतया दूरदर्शन पर उन्हें अपने मृत पूर्वजों के अवशेशों को टटोल कर स्नेह व्यक्त करते देखा होगा। वह असीम शक्ति और सामर्थ्य का स्वामी है; उसके मुकाबले इन्सान कहीं पर भी नहीं टिकता; वह आदमी से ज्यादा विश्वास पात्र और कुत्ते से ज्यादा स्वामिभक्त है। हाथी का सिर इसी बात का प्रतीक है; हमें अपने मस्तिश्क से कैसे काम लेना चाहिये। आपको सम्भवतः कथानक स्मरण होगा; जब उन्होंने माता–पिता की परिक्रमा कर; अपने वाहन मूशक से पृथ्वी की परिक्रमा की थी। शिव जी के दूसरे पुत्र कार्तिकेय हैं; जो देवता सेना के सेनापति हैं; दुश्टों के संहारक और उनकी शक्तिरुपा भगवती काली मॉ राक्षसों का वध कर समाज में स्वच्छता का कार्य करती हैं। पर्वत पुत्री पार्वती उनकी सहधर्मिणी हैं; जो वर्तमान में टूटते पारिवारिक सम्बन्धों के लिये मार्ग–दर्शक हैं।

हम इसी सृष्टि के उत्पाद हैं; अतः हमारे में भी इन शक्तियों का समावेश है। ब्रह्मा के रूप में हम सन्तति उत्पन्न करते हैं। विश्णु की तरह उनका पालन–पोशण करते हैं और

अच्छा हो आर्य समाज हवन से उपर उठे

अभी हाल में दो ऐसी घटनायें घटी है जो कि आज से 70 साल पहले वाले समय में होती तो आर्य समाज के लोग सड़को पर होते।

पहला ––हिमाचल प्रदेश में पशुओं की बली पर कोर्ट का प्रतिवन्ध लगने के बावजूद कुल्लू के आसपास के मन्दिरों के महन्त देव इस प्रतिबन्ध का विरोध कर रहे हैं। आर्य समाज का यह कर्तव्य बनता है कि उन महन्तो के सामने निडर होकर अपनी आवाज उठाये। कुल्लू, मण्डी, सुन्दर नगर में आर्य समाजें हैं। वे ऐकत्रित होकर कोर्ट के प्रतिवन्ध के समर्थन में एक यात्रा निकालें। तभी लोगों को पता लगेगा आर्य समाज कोई चीज है। सुन्दर नगर के एक महात्मा दूर दूर जाकर तो उत्सवों में उपदेश देते हैं और कथांऐ करते है। वहां क्यों नहीं कुछ कर रहे? कहीं बिना दक्षिणा के भी कुछ करना चाहिये और चिराग तले अन्धेरा नहीं होना चाहिये।

दूसरा––अभी हाल में, बिहार के मुख्यमन्त्री जितिन राम मांजिह मधुबनी शहर के एक मन्दिर में जब दर्शन याचना करके बापिस आये जो मन्दिर के प्रबन्धकों ने मन्दिर में रखी मूर्तीयों को और मन्दिर स्थल को इस लिये धोया क्योंकि श्री मांजिह महाशुद्र जाति के हैं। यह बहुत शर्म की बात है। स्वामी श्रद्धानन्द, महा"k; d".k] egkRek vkuun Lokeh ने तो अपने समय में छूआछूत के विरोद्ध में मोरचा खोला हुआ था। आज बिहार के आयों समाजों को चाहिये कि इस कार्य के विरूद्ध आवाज उठाये।

अभी हाल में जब मोदी सरकार ने शपथ ली तो कुछ आर्य समाजियों ने रोश प्रगट किया कि मोदी ने आर्य समाज के सन्यासियों को नहीं बुलाया। अरे भाई बुलाये तो तब जब तुम कुछ करो। आज हवन, भजन सन्धयां, संस्कृत प्रचार, और अभिन्दनों के सिवा हम करते ही कुछ नहीं हैं तो आर्य समाज को सुनेगा कोन। सारे समाज को हिला देने वाली जघन्य वार्ताओं की भी आर्य समाज में एक मिन्ट के लिये चर्चा नहीं होती। जो संस्था समाज से ही अलग है उसकी उन्नती सम्भव नहीं। हां हुछ लोगों का धन्धा चलता रहेगा।

******

शिव रूप में उन्हें दण्ड़ दे कर; मार्ग दर्शन कर उनका कल्याण करते हैं। बहुश्रुत कथन है ''गुरुः ब्रह्मा गुरुः वि"णुः गुरुः देवो महश्वेरः''। सम्भवतः विधायिका; कार्यपलिका; न्यायपालिका तथा नारद जी की व्याख्या भी इसी आधार पर की जा सकती है?

वर्तमान में नारी–सुरक्षा और ''मनुस्मृति'' पर भ्रम की स्थिति है अतः इस पर विचार–विमर्श उपयुक्त रहेगा। ''आत्मानम् आत्मना याः तु रक्षेयुः ता सुरक्षिताः'' मनुस्मृति–9. 12। अर्थात् जो स्त्री अपनी रक्षा स्वयं कर सकती है; वह सदा सुरक्षित रहती है। स्वावलम्बी; बुद्धिमान; और आत्मविश्वास से सम्पन्न नारी अपनी रक्षा करने में सदा समर्थ रहती हैं।

मनुस्मृति को सामान्यतया धर्मग्रन्थ माना जाता है। लेकिन यह विधि (कानून) का ग्रन्थ है। वास्तव में धर्म और कानून का घनि"ट संम्बन्ध है। इसमें धर्म के नाम पर कहीं भी पूजा–पाठ या देवी–देवताओं का पूजन नहीं है। लेकिन उस समय की सामाजिक और नैतिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिये विस्तृत वर्णन है; जो तात्कालिक परिस्थितियों में आवश्यक रहे होगे। राजा और प्रजा के हर वर्ग के कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन है और दण्डविधान बताया गया है। बहुत छोटे कर्मो का भी दण्ड निधान का वर्णन है जैंसे जल स्रोतों को तोड़ना; अन्न भण्डार; अस्त्र–शस्त्र गृह अथवा देवालयों को भंग करना, राज मार्ग पर कूड़ फेंकना; मनु"य या पशु चिकित्साकों द्वारा उचित ढंग से कार्य न करना; व्यापारी वर्ग द्वारा मूल्य से अधिक मूल्य या निम्नस्तर की वस्तु देना इत्यादि। विस्तृत विवरण के लिये ग्रन्थ देखें। मनुस्मृति में धर्म का अर्थ करणीय कर्म बता गया है अर्थात् व्यक्ति की जीवन शैली, कियाकलाप ऐसे होने चाहिये जिससे व्यक्ति; परिवार; समाज और देश में व्यवस्था बनी रहे और उन्नति सुनिश्चित हो। वर्तमान संविधान की तरह यह भी उस काल का संविधान–ग्रन्थ था। लेकिन समयानुसार इसमें संशोधन/परिवर्तन नहीं हो पाये। जिसके कारण वर्तमान में इसके अनेक कथन इतने अप्रासांगिक हो गये हैं कि लोग तीब्र–कटु प्रतिकिया व्यक्त करते हैं।

प्रधान आर्य समाज, सोलन ,हि0प्र0 01792–223465

An NRI is not a foreigner

Bhartendu Sood

THE recent incident related to a village school near Lucknow, which temporarily admitted a fluent English-speaking student from a public school to impress the visiting former US President Bill Clinton about its standard of education, once again reinforces the view that when it comes to foxing others, we are the past masters and if the person at the other end happens to be a foreigner, then immediately we switch over to the top gear as this anecdote will reveal.

Sometime back, three of my friends from Sri Lanka visited the Taj in Agra. Standing in a queue in front of the ticket counter meant for foreigners, they were approached by a gentleman. "Sir, we value your time and have a special arrangement for you". And soon he got them three tickets by taking Rs 2,250 (For a foreign visitor the entry charges are Rs 750 each). They were happy and thanked him profusely. Back in the hotel as they casually looked at the tickets, they were shocked to find that the printed value on the ticket was Rs 20. He had managed their entry with the tickets meant for Indians.

But when you try this on an NRI, chances are that he beats you at your own game as another incident narrated by my friend in Dasua suggests.

An NRI Sardarji had come to his village after three years. Naturally most of the appliances in his palatial house, which was locked during this period, had become non-functional. Finding our sweltering heat intolerable, first he looked for an AC mechanic. The one whose nick name was Kala did the repairs and demanded Rs 800. Sardarji instantly gave him a Rs 1,000 note. A bit surprised that Sardarji didn't indulge in haggling, though his labour charges already had that provision, he hurriedly took out Rs 200 to refund him. Sardarji pompously patted his back and said: "Kala, keep it .This is a small tip. Yes, if you don't mind send an electrician." Within minutes Kala was there with one. When the job was over, Kala quietly relieved the electrician. Having already tasted Sardarji's generosity, Kala demanded double the amount which he was paid without any fuss. Now, Kala would take care of Sardarji's all needs, from repairs to the supply of daily needs. But what was really astonishing was that despite Kala's unfettered greed, Sardarji's remained munificent.

Now the time had come for Sardarji to return. Busy in normal tête-à-tête with Kala, he made an overture, "Kale, I've found you very enterprising. You can earn at least 10 times the money you earn here if you migrate to Italy." It sent Kala on the seventh heaven. Betraying his emotions, he muttered: "Sardarji, I was already thinking of making this request to you. Indeed, God is very kind to me". Sardarji paused and said, "Look, the Italian government takes around 5,000 Indians every year for agriculture work. I can forward your name but one has to pay around Rs I lakh to middle men. Since you served me so well I will pay Rs 50,000 from my pocket but the balance Rs 50,000 you will have to arrange."

The next day Kala was at Sardarji's feet with a bag of Rs 50,000 and both separated happily. Three months had passed but there was no news. Worried and anxious, at last Kala called Sardarji. "Kale, sorry. This time you were not lucky. But, next time I will ensure that you are selected but please send at least one lakh as the rates have gone up" was the reply.

Kala had understood that any NRI was an Indian before he became an NRI. Therefore, one should never do the mistake of trating NRI like a foreigner.

निष्काम सेवा का एक सुन्दर उदाहरण

''मुझ बहुत सुख का आभास होता है जब भी मुझे ऐसा लगे कि किसी गरीब और जरूरतमन्द के मैं काम आ सका हूं। मुझे एक दम बहुत शक्ति का आभास होता है'' यह शब्द हैं 83 of"k; सेवानिवृत मेजर जरनल मुल्कजीत कंदाल के जो कि पिछले 40 व"ों से समाज सेवा में लगे हैं और साथ ही होमियोपैथिी द्वारा गरीबों का उपचार भी करते है। खास बात यह है कि गरीबों की सेवा का जनून इन में इस कदर भरा था कि मेजर जरनल होने के बावजूद भी इन्होने सेना से समय से पहले ही रिटायरमैंट ले ली।

उन्हानें गरीवों तक पहुंचने के लिये चलता फिरता अस्पताल अपनी मोवाईल वैन पर बना रखा है और दूर गांवों में लोंगों के घर जा कर उनका चैक अप करते हैं। यह सवेरे नो बजे घर से निकल जाते हैं, चार दिन तो दूर गांवों में लोंगों के घर जा कर उनका चैक अप करते हैं और बाकी तीन दिन अलग –अलग जगह कलीनिक में ही रोगियों को देखते हैं। उनका कहना है कि चाहे वह परिवार के लिये समय नहीं दे पाते पर उनक परिवार वालों को कोई शिकायत नहीं। वे पूरा सहयोग देते हैं।

ldke de (activity where self interest is involved) केवल वैभव सम्पन्न बना सकता है, परन्तु चिरस्थायी यश और नाम नहीं मिलता। ijUrq fu"dke Selfless कर्म ऐसा आलौकिक आनन्द देने वाले होते हैं जो वाणी व्यक्त नहीं कर सकती, केवल अनुभव ही किया जा सकता है। जब की सकाम कर्म फलानुसार बंधन के कारण बनते हैं, क्योंकि उनसे प्राप्त सुखों व दुखों से मनुष्य बन्ध जाता है, परन्तु fu"dke Selfless कर्म बन्धन का कारण नहीं होते। इस सेसार में सदा से ही अच्छे और बुरे व्यक्ति हुयें हैं। इन्ही अच्छे लोगों में निष्काम सेवी सब से उपर हैं। बहुत ज्ञानी और विद्वान भी बिना सेवा की भावना के उन से बहुत नीचे हैं।

कहते हैं कि गुरू गोबिन्द सिंह के समय में सिक्खों द्वारा लड़े जा रहे एक युद्ध में एक बार कुछ सिक्ख योधा गुरू गोबिन्द सिंह के पास आकर बोले––एक बिश्ती जिसका नाम धनैया है हमारे शत्रुओं को भी पानी पिला रहा है। गुरू गोबिन्द सिंह जी ने धनैया को बुलाया तो उस ने इस बात को स्वीकार किया और बोला––महराज लड़ाई के मैदान में जब मैं किसी जख्मी को देखता हूं तो मुझे वह सिक्ख या मुगल नहीं लगता क्योंकि हर जख्मी में मुझे गुरू का चेहरा ही नज़र आता है। गुरू गोबिन्द सिंह अन्दर गये व अपने साथ बहुत सारी दवाईया, मरहम, पटिटयां ला कर घनईया को देते हुये बोले––आगे से जब तुम जख्मियों को पानी पिलाओं तो मरहम पटटी भी कर दिया करो।

इसी तरह जब मह"ाी दयानन्द सरस्वती की मृत्यु के पश्चात उनके अनुयाईयों ने अज्ञान का अन्धकार दूर कर देश में शिक्षा के प्रसार का कदम उठाया तो प्रश्न उठा साधन कहां से आयेंगे। महात्मा हंसराज जो कि उस समय के B.A. थे व सरकार में किसी भी उंचे ओहदे पर लग सकते थे, आगे आये व बोले मैं बिना वेतन लिये स्कूल के हैडमास्टर का काम करूगां व उन्होने 25 वर्ष बिना कोई वेतन लिये पहले स्कूल व बाद में कोलेज़ के principal dk dk; fd;kA ;gh ugh viuk ckdh thou Hkh fu"dke lsok esa gh yxk;kA

xhrk esa Hkh Hkxoku d".k us fu"dke de dks lc ls mre crk;k gS vkSj fu"dke de dks gh efDr dk lk/ku ork;k gSA

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

कोई भी अच्छी बात मन्त्र द्वारा संस्कृत में बोलें या किसी दूसरी भा"ाा में बोले, बात एक ही है

वैसे मैं बता दूं कि मन्त्र बोलने में और इंगलिश में कविता बोलने में कोई फर्क नहीं। फर्क तो आप के नज़रिये ने बना दिया है। मन्त्र बोलने वाला गुरूकुल में संस्कृत पढ़ा इसलिये मन्त्र पटाक से बोलता है जब कि आप का बच्चा अंग्रेजी स्कूल में पढता है इसलिये पटाक से इंगलिश में कविता बोलता है । गुरूकुल वाले को ज्ञानी मानकर आप आदर देना शुरू कर देते है वच्चे की कविता को चाहे उस में कितनी अच्छी बात क्यों न हां कोई ध्यान नही देता। जब कि देखने वाली चीज यह नहीं कि वह संस्कृत में मन्त्र बोल रहा है, देखने वाली बात है कि क्या ज्ञानी होने के अलावा उस के जीवन में तप, त्याग और आचरण है,। जैसे अच्छी बातें संस्कृत सहित्य में हैं वैसे ही nlj h Hkk"kkvk e: Hkh g:A

मुझे याद आती है आज से 50 व"ाॅ पहले बनी पिकचर 'गाईड' की। इस में हालात ऐसे बनते हैं कि एक गांव वाले, देवानंद को, जो की हीरो था, धर्म गुरू मानना श्शुरू कर देते हैं जब कि वह Li"V बताता है कि वह तो जेल काटा अपराधी है। खैर यह हिन्दुसतान है यहां अन्धविश्वास ही हमारे जीवन को खींच रहा है। यही हाल उस गांव के लोगों का था वे देवानंद की बात सुनने को कहां तैयार थे उनके लिये तो वह नया भगवान था। उसकी पूजा होने लगी।

इस से स्वभाविक तौर पर जो पण्डित वहां पहले से थे उनको बहुत फर्क पड़ा। उनका धंधा चौपट हो गया और दक्षिणा आनी भी बन्द हो गई। उन्होने योजनाबध तरीके से देवानंद को अपमानित करने की योजना बनाई।

एक दिन जब गांव के लोग सभा कर रहे थे तो वे दोनो पण्डित आये और लोगों से बोले कि आज फैसला हो जायेगा कि यह पण्डित है कि नहीं। उन्होने देवानन्द के सामने एक संस्कृत का मन्त्र बोला और कहा कि उसका अर्थ कर के बताये। देवानंद को तो संस्कृत आती नहीं थी, पर था हुशियार, उसने फटाक से अंग्रेजी की दो लाईने बोली और कहा इसका अर्थ करके बताओ। पडित हैरान परेशान, उनको अंग्रेजी कहां आती थी, और वे वहां से भागते बने बात यह है कि हम यह क्यों माने कि संस्कृत जानने वाला ही पण्डित ज्ञानी है। किसी भी भाषा का व्यक्ति ज्ञानी पण्डित और महात्मा हो सकता है अगर उसमें ज्ञान, तप,त्याग और आचरण है। आज होता क्या है, श्शादी हो या फिर कोई दूसरा संस्कार, पण्डित अपनी टूटी फूटी, ठीक गलत संस्कृत में मन्त्र बोलता रहता है, उसको पता होता है कि किसीको कुछ समझ नहीं आता। हम सोचते है कि ईश्वर को हमारा संदेश जा रहा है। जो आपको समझ ही नहीं आया वह ईश्वर कैसे समझ जायेगा। ईश्वर तो भावना समझता है , भा"ाा नहीं। मजे की बात यह है कि जिन का संस्कार हो रहा होता है, उन्ही को कुछ समझ नहीं आता। अच्छा होगा हम इस अन्धविश्वास से बाहिर आयें। संस्कार और ईश्वर भक्ति उसी भाशा में करें जो आपको व आपके बच्चें को समझ आये। यही एक मुख्य कारण है कि आज हमारे आर्य समाजीयों के बच्चे, बड़े होकर दूसरे मतों में चले जाते है। क्योकि हम उनके सामने हवन करते रहते हैं मन्त्र बोलते रहते हैं जो उन को समझ नहीं आते। वे आसान रास्ता ढूंढ लेते हैं।

ये आचार्य वेदालंकार तो बोलेंगे ही कि संस्कृत में संस्कार होना चाहिये और हवन होना आवश्यक हैं क्योंकि इनका तो धंधा कमाइ का साधन है। समझना तो हमें हैं। तर्क के साथ जो बात का निर्णय करता है वही आर्य समाजी है।

vxj vkidk dN dguk g ;k if=dk subscribe djuh g
dl;k fuEu address ij lEid dj
Hkkjr Un ln] 231 lDVj& 45-A, p.MhxM-160047
0172-2662870] 9217970381] E mail : bhartsood@yahoo.co.in

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

महिला वृद् आश्रम के कमरे बनाने का काम शुरू होने जा रहा है। जो भी सज्जन अपने माता/पिता या किसी अन्य व्यक्ति की समृति कमरा बनाना चाहता हो तो कृपया करके संपर्क करें।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, **नरेन्द्र गुप्ता** **लेखराम** (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.kZ ds 63 o"kZ

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

वेदों का ज्ञान कैसे और कहां से

आप नमक की बोरी कहीं रखिये। एक भी चींटी कभी उसके पास नहीं आती परन्तु कटोरी में थोड़ी खाण्ड कहीं रख दो, एक के पीछे दूसरी और दूसरी के पीछे तीसरी सब चींटियां पंक्तिबद्ध खाण्ड के पास पहंच जाती हं। आदमी नमक और खाण्ड को चख कर ही पता लगाता है कि यह क्या है परन्तु, अनपढ़ चींटियों चखने की आवश्यकता नहीं होती। उनको ईश्वर की कृपा से स्वभाविक ज्ञान होता है कि यह नमक है और यह खाण्ड है।

सब प्राणियों को जीवन के निर्वाह के लिए जन्म लेते ही ही सर्वव्यापक पभु आवश्यक ज्ञान देता है। मधुमक्खी को मधु बनाना उसी ने सिखाया है। बया पक्षी को सुन्दर धोंसला, जिसको देख कर euq"; Hkh दंग रह जाता है वह ईश्वर ही सिखाता है। blh तरह मनु"य अपना जीवन कैसे जीये, यह ज्ञान भी ईश्वर ने सृ"टि के आदि में ऋf"k;ks }kjk osnks ds :Ik esa euq"; dks fn;kA

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years
in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870